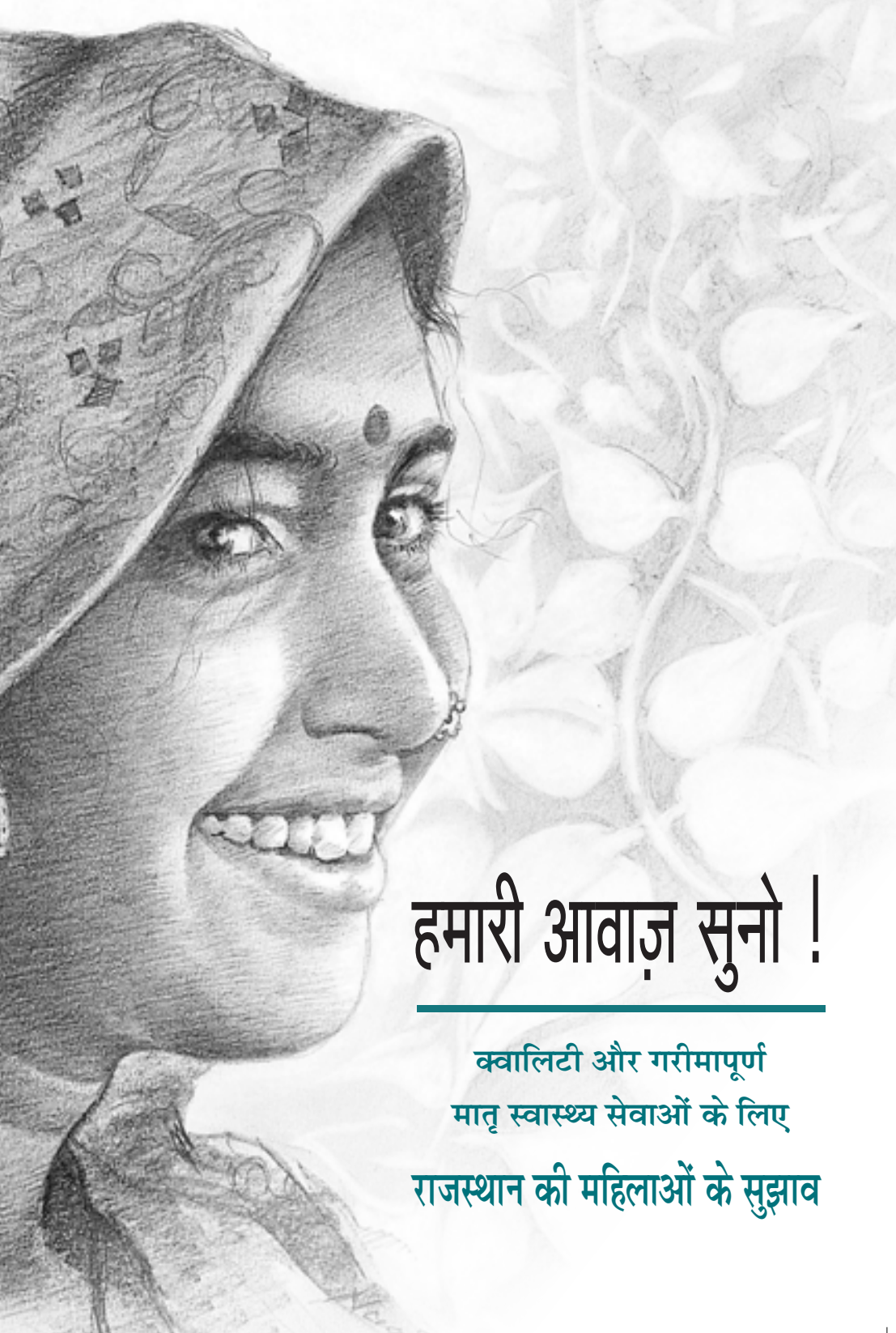

हमारी आवाज़ सुनो !

क्वालिटी और गरीमापूर्ण मातृ स्वास्थ्य सेवाओं के लिए

राजस्थान की महिलाओं के सुझाव

प्रस्तावना

राजस्थान की मातृ मृत्यु दर 244 से घट कर 199 प्रति एक लाख जीवित शिशु जन्म हो गई है ((सेम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम 2011-13 और 2014-16)। ये बधाई के पात्र है। क्वालिटी और निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध करवाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बढ़ी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य के वांछित परिणामों की प्राप्ति के लिए जरूरी है कि स्वास्थ्य सेवाएँ सुरक्षित हों, प्रभावी हों, कार्यकुशल हों, समता पूर्ण हों और लोगों को केन्द्र में रखकर बनाई गई हों। महिलाओं के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं को प्राप्त करना इस बात पर निर्भर करता है कि वे स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता के बारे में क्या सोचती हैं।

इसलिए महिलाओं के नज़रिए से गुणवत्ता को समझना और स्वास्थ्य प्रणाली से उनकी अपेक्षा जानना अति आवश्यक है। उनकी अपेक्षाओं के आधार पर स्वास्थ्य सेवाओं का नियोजन होने से उन्हें स्वास्थ्य सेवाओं को अपनाने में सरलता रहेगी और सेवाओं की गुणवत्ता के प्रति संतोष बढ़ेगा।

व्हॉट विमेन वांट केम्पेन

व्हॉईट रिबन एलायन्स एक विश्व स्तरीय एलायन्स है जो महिलाओं के स्वास्थ्य एवं अधिकार की पैरवी करती है। व्हाईट रिबन एलायन्स द्वारा 11 अप्रैल 2018, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस पर व्हॉट विमेन वांट केम्पेन की शुरुआत की गई। इस अभियान में प्रजनन और मातृत्व स्वास्थ्य सेवाओं से महिलाओं की अपेक्षाएँ पूछी जा रही हैं। भारत में इस अभियान को हमारा स्वास्थ्य हमारा अधिकार के नाम से व्हाईट रिबन एलायन्स इंडिया द्वारा चलाया जा रहा है।

हमारी आवाज सुनो (व्हाट विमेन वांट) अभियान

राजस्थान में **"हमारी आवाज सुनो"** नाम से चलाए जा रहे इस अभियान का संचालन सुमा–राजस्थान सुरक्षित मातृत्व गठबंधन की सचिवालय चेतना–अहमदाबाद द्वारा किया गया है। चेतना द्वारा साथी संस्थाओं का मार्गदर्शन, एकत्रित किये गए डेटा की कम्प्यूटर में एन्ट्री, विश्लेषण और रिपोर्ट तथा सहयोग प्रदान किया गया है। इस अभियान में 22 ज़िलों से 6972 महिलाओं की आवाज़ एकत्रित की गई, जिसका यह प्रतिवेदन है।

महिलाएँ कहती हैं...

महिलाओं द्वारा कहे गए कुछ विधान
जो उनकी आवश्यक्ता दर्शाते हैं।

सेवाओं की उपलब्धता

''गांव में स्वास्थ्य केंद्र है, लेकिन एएनएम कभी-कभार ही आती है। उपकेंद्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर अपग्रेड किया गया है। पीएचसी में डॉक्टर उपलब्ध नहीं हैं और एम्बुलेंस की कोई सुविधा नहीं है। स्वास्थ्य केंद्रों में बिजली, पानी, शौचालय, आवास होना चाहिए। हालांकि स्वास्थ्य केन्द्र है, पर उपचार उपलब्ध नहीं है।" (धापू, 32, बाड़मेर)

"जब गाँव में कोई स्वास्थ्य केंद्र नहीं है, तो कोई महिलाओं के स्वास्थ्य के बारे में क्या बात कर सकता है? उन्होंने आंगनवाड़ी केंद्र बनाए हैं जहाँ बुखार की गोली भी नहीं मिलती है। आशा के पास कुछ भी नहीं है, वह केवल हमारे स्वास्थ्य के बारे में चर्चा करती है।" ये सुविधाएं होनी चाहिए।''(गुड्डी, 23, अजमेर)

"महिला डॉक्टर और नर्स होनी चाहिए, जिन्हें हम आसानी से अपनी समस्या बता सकते हैं। अगर महिला डॉक्टर हैं, तो महिलाएँ और लड़कियाँ आसानी से अपनी समस्याएँ बता सकेंगी और उचित इलाज करा सकेंगी।"(तारा, 31, अजमेर)

"हर अस्पताल में एक एक्स-रे और सोनोग्राफी कक्ष होना चाहिए और इसमें एक नर्स और एक डॉक्टर होना चाहिए। गर्भवती महिला को ऑपरेशन थियेटर और लेबर रूम में ले जाने के लिए व्हीलचेयर होना चाहिए। मरीजों को अच्छी गुणवत्ता वाली चाय, कॉफी, कैंटीन से दूध, नाश्ता और जूस दिया जाना चाहिए।''(मैना, 24, टोंक)

(* सूचना : निजता को ध्यान में रखते हुए नाम बदल दिए गए हैं।)

समता, गरीमा और सम्मान

कई महिलाओं ने उनके साथ सेवा प्रदाता द्वारा किए गए व्यवहार के बारे में बताया विशेष कर जब वो दर्द से कराहती हैं। महिलाओं ने शाब्दिक और शारीरिक हिंसा की बात कही ।

"प्रसव पीड़ा व दर्द में महिला चिल्लाती या रोती है तो उसे थप्पड़ मार दिया जाता है। नर्स, डॉक्टर को महिला को थप्पड़ नहीं मारना चाहिए। उन्हें स्नेहपूर्वक बात करनी चाहिए और प्रसव का संचालन करना चाहिए ताकि महिला को उन पर भरोसा हो। चिकित्सक या नर्स को किसी भी महिला को प्रसव से डराना नहीं चाहिए। ऑपरेशन के बारे में डर भडका कर महिला को डराया जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। लेबर रूम में, महिला के घर से एक महिला होनी चाहिए, ताकि अस्पताल का स्टाफ गलत व्यवहार न कर सके।"(रामप्यारी, 32, करौली)

कई महिलाओं ने उनके साथ हुए भेदभाव के बारे में बताया जो उनके अनुसार गरीबी और अज्ञानता के कारण हुआ ।

"हमारे गाँव में विभिन्न समुदायों की महिलाएँ हैं। महिलाओं और लड़कियों के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। गरीब, अमीर, ऊँची और नीची जाति को समान माना जाना चाहिए। अस्पतालों में, डॉक्टर एक गरीब महिला को छूने से डरते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी दी जानी चाहिए ताकि वे उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें और अपने जीवन में आगे बढ़ सकें।"(संतोष, 34, चित्तौड़गढ़)

महिलाओं ने स्वास्थ्य एवं सेवा प्रदाता के बारे में जानकारी प्रदान करने की मांग रखी ।

"अस्पताल के डॉक्टर के मोबाइल नंबर को गाँव के चौराहे पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए। और गाँवों में एम्बुलेंस संख्या प्रदर्शित की जानी चाहिए ताकि आम लोगों को अस्पताल पहुँचने में कोई कठिनाई न हो। डॉक्टर का व्यवहार अच्छा होना चाहिए।" (राज़ी, 34, सवाई माधोपुर)

सम्मानजनक व्यवहार और सेवा प्रदाता के प्रशिक्षण के बारे में माहिलाओं ने बताया ।

"महिलाओं से सम्मान के साथ बात की जानी चाहिए। यदि महिला से बात करते समय तिरस्कार दिखाया जाता है, तो वह इसके बारे में बात करने में संकोच करती है। महिलाओं के स्वास्थ्य की संवेदनशीलता और गंभीरता पर सरकारी या निजी अस्पतालों में काम करने वाली नर्स या डॉक्टर के लिए जागरूकता और संवेदनशीलता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाने चाहिए।" (गीता, 24, डूंगरपुर)

पात्रता

महिलाओं ने उन्हे मिलने योग्य सेवाओं/योजनाओ के लाभ प्राप्त करने दिक्कत के बारे में बताया ।

"हमें अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए मजदूरी करनी होती है। हमारे पास अपनी जमीन नहीं है। ऐसी स्थिति में, ममता कार्ड बनाने के लिए या भामाशाह योजना के लिए, दस्तावेज कुचामन सेवा केंद्र में उपलब्ध हैं। हमारे पास ये काम करने के लिए समय नहीं है।" (मौली,नागोर)

महिलाओं ने संकट के समय मुफ्त रक्त की मांग की ।

"गर्भवती महिलाओं के लिए निःशुल्क रक्त की व्यवस्था होनी चाहिए। यदि मुफ्त नहीं है, तो उचित मूल्य पर होना चाहिए या कम पैसे लेने चाहिए। वे एक रक्त बैग के लिए अधिक शुल्क लेते हैं, जिसे श्रमिक वर्ग की महिलाएँ वहन नहीं कर सकती हैं। या वे रक्तदान के लिए कहते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि योजनाएं आम आदमी तक पहुंचें, सरकार को बारीकी से काम करना चाहिए, लिंकेज तैयार करना चाहिए और सूचना का प्रसार करना चाहिए ताकि गरीब व्यक्ति को लाभ मिल सके।" (शांति, जालोर)

सभी जिलों से कई महिलाओं ने पैसों की मांग को ले कर परेशानी जताई। विशेषकर डिलीवरी के बाद की मांग ।

"यहां डॉक्टर और नर्स स्टाफ पैसे लेने के बाद ही काम करते हैं। डिलीवरी के दौरान, वे खुलेआम पैसे की मांग करते हैं। बताया जाने पर, डॉक्टर कहते हैं कि कोई पैसा नहीं लिया जाएगा। लेकिन डॉक्टर अस्पताल में कम मरीजों की जाँच करते हैं। ज्यादातर मरीज घर पर होते हैं और उनसे पैसे लेते हैं। अस्पताल में सभी तरह की मुफ्त दवाएं उपलब्ध होनी चाहिए।" (सुमन, 30, भरतपुर)

सभी जिलों से, उदयपुर और बूंदी से विशेष, महिलाओं ने वाहन व्यवस्था की मांग की है।

''बारिश के मौसम में खडकट ग्रामपंचायत के जंगल वाले छः-सात गांवो में प्रसूताओं को चारपाई पर बडी रिस्क से लाया जाता है। उनके लिए कोई विशेष व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे सुरक्षित प्रसव हो सकें।'' (मैना, 42 बूंदी)

"बीपीएल परिवार की महिलाओं को पहले प्रसव के बाद घी दिया जाता है। लेकिन क्योंकि वे गरीब हैं, वे दूसरी डिलीवरी के लिए घी नहीं खरीदती हैं। और उनका स्वास्थ्य बिगडता है। इसलिए, उन्हें दूसरी डिलीवरी के दौरान भी घी दिया जाना चाहिए। मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि सभी किशोर लड़कियों को सैनिटरी नैपकिन की सुविधा दी जानी चाहिए।"(चंपा, टोंक)

अन्य माँगें

महिलाओं ने कई अन्य मांगो को भी बताया।

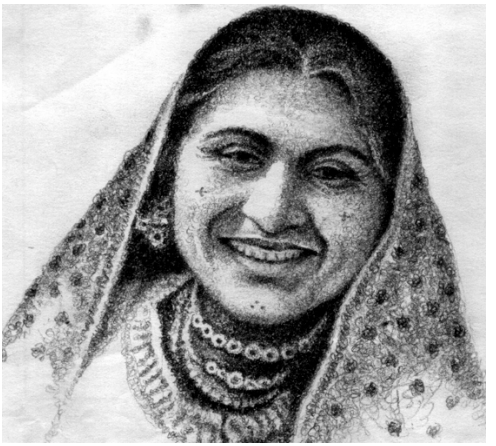

"हमें (पंजीकरण) पर्ची के लिए लंबी कतार में लगना पड़ता है। महिलाओं की पर्ची के लिए एक अलग कमरा होना चाहिए। स्वास्थ्य केंद्र में महिलाओं के लिए पानी और शौचालय की व्यवस्था होनी चाहिए।"(माया, 32, जयपुर)

"पानी और बिजली उपलब्ध होनी चाहिए। महिलाओं के साथ जाने वाले परिवार के सदस्यों के लिए बैठने की व्यवस्था होनी चाहिए। उप केंद्र में कम से कम दो बिस्तर होने चाहिए।"(रेखा, 43, जोधपुर)

"सरकारी अस्पताल अच्छी दवाएँ उपलब्ध नहीं कराता है। अस्पताल में गोलियों की गुणवत्ता अच्छी नहीं है। और दवा की अपर्याप्त खुराक दी जाती है।" (संतोष, 40, सीकर)

22 जिले में महिलाओं की अपेक्षाएँ (%)

राजस्थान के 239 गाँव और ढाणियों की 6972 महिलाओं से सुमा ने पूछा की क्वालिटी, गरीमापूर्ण मातृ स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वे क्या चाहती हैं और सरकारी स्वास्थ्य तंत्र से उनकी अपेक्षा क्या है। उन्होनें ये कहा...

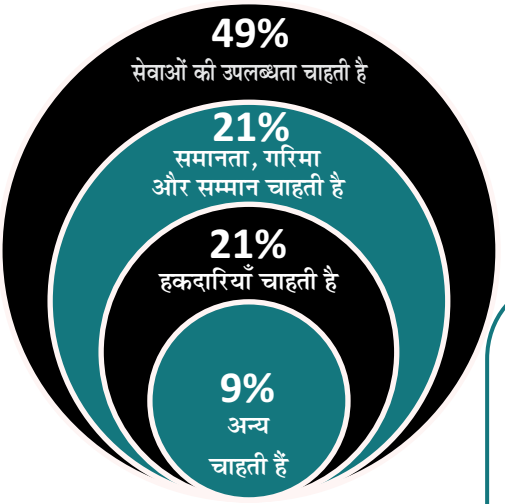

लगभग 21.3% महिलाएँ चाहती हैं – सरकारी सुविधाओं पर स्वास्थ्य सेवा प्रदाता 24 घंटे उपलब्ध होना चाहिए। उन्हें रोगियों को समय पर और चौबीस घंटे सेवाएं प्रदान करनी चाहिए।

लगभग 9% महिलाएँ चाहती हैं –

- गांवों में बुनियादी सुविधाएँ जैसे सुरक्षित पेय जल और बिजली।
- आंगनबाड़ी केन्द्र पर पूरक भोजन की अच्छी गुणवत्ता
- अच्छी गुणवत्ता वाली दवाएँ
- महिलाओं के लिए अलग पंजीकरण काउंटर और वार्ड
- मरीजों और उनके रिश्तेदारों के लिए बैठने की आरामदायक व्यवस्था।

लगभग 5-8% महिलाएँ चाहती हैं –

- सरकारी सुविधाएं स्वच्छ और कार्यरत होनी चाहिए।
- केंद्रों में अपेक्षित आपूर्ति होनी चाहिए।
- केंद्रों में महिला स्वास्थ्य कर्मचारी होनी चाहिए ताकि उन्हें मुफ्त सेवाएं प्रदान की जा सकें।
- प्रसूति संबंधी आपात स्थितियों के दौरान महिलाओं के लिए रक्त उपलब्ध होना चाहिए।
- डॉक्टरों और नर्सों को बाहर से दवाएं नहीं लिखनी चाहिए और न ही सेवाओं के लिए पैसे की मांग करनी चाहिए।
- स्वास्थ्य संबंधी निर्णय लेने के लिए स्थानीय भाषा में व्यापक और प्रासंगिक जानकारी।
- शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिसमें महिलाओं को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सभी सेवाएँ मिल सकें।

22 जिले में महिलाओं की अपेक्षाएँ (%)

- महिलाएँ अपेक्षा करती है की उन्हे समेकित और आवश्यक जानकारी स्थानिक और सरल भाषा में उपलब्ध करवाई जाए।
- कुछ महिलाओ के केम्प आयोजित करने को कहा ताकि वे प्रजनन मार्ग की समस्याएँ सरलता से बता सके।

2 % से कम महिलाएँ चाहती हैं

- आशा और एएनएम ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध होनी चाहिए।
- सुविधा स्तर पर एक्स–रे और सोनोग्राफी मशीनें हों।
- लेबर रूम में पुरुष कर्मचारी की उपस्थिति नहीं होनी चाहिए।
- महिलाओं को लेबर रूम में अपनी पसंद का साथी रखने की अनुमति होनी चाहिए।
- उनकी गोपनीयता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत महिलाओं को उनकी पात्रता के अनुसार लाभ मिलना चाहिए।

कूल 24 महिलाएं चाहती हैं उनके क्षेत्र में कार्यात्मक लनिक हो ।किशोर–किशोरीओं के लिए संवेदनशील कि

5 % से कम महिलाएँ चाहती हैं

- सम्मानजनक,गैर–भेदभावपूर्ण सेवाएँ, बिना किसी दुर्व्यवहारके प्रदान की जानी चाहिए।
- संकट के समय गाँव के दूरस्थ कोने तक मुफ्त परिवहन की उपलब्धता।

जिले अनुसार महिलाओं की कुछ मांग।

"हमे निःशुल्क देखभाल और सेवाएँ प्राप्त हों"

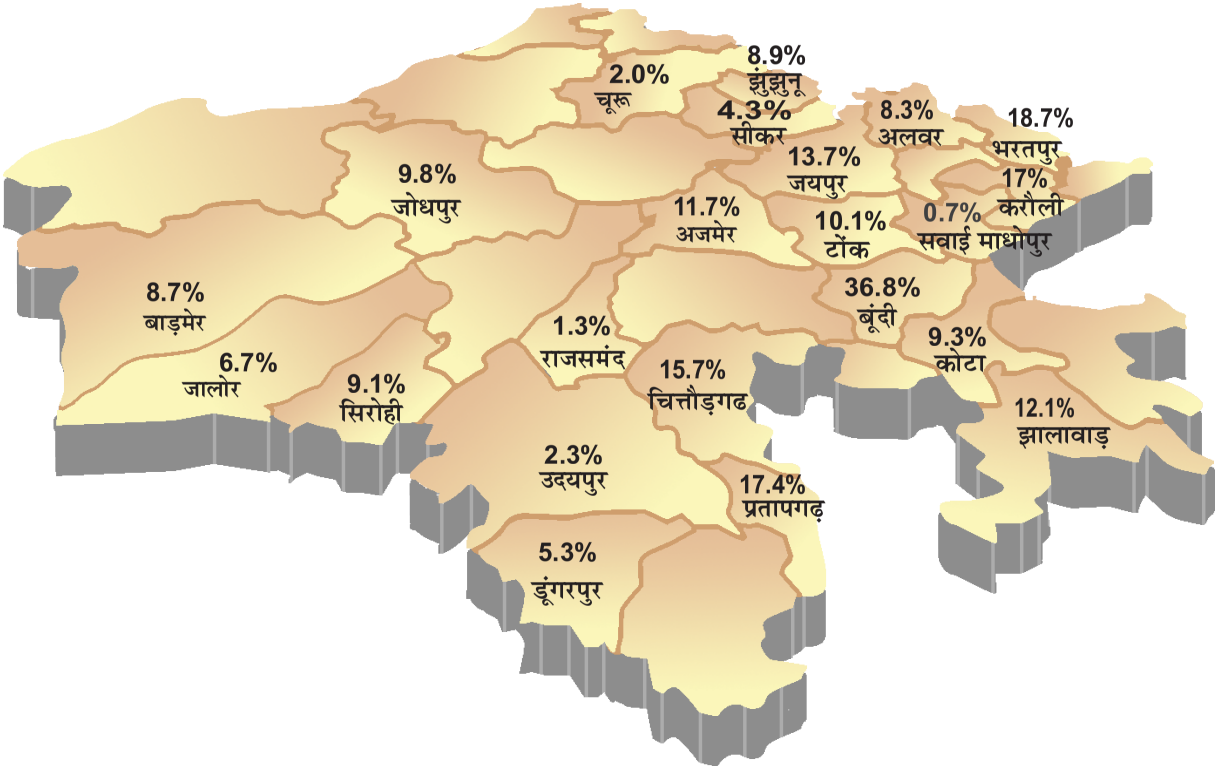

जिले अनुसार महिलाओं की कुछ मांग।

''हमे महिला चिकित्सक तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ की सेवाएँ चाहिएँ ।''

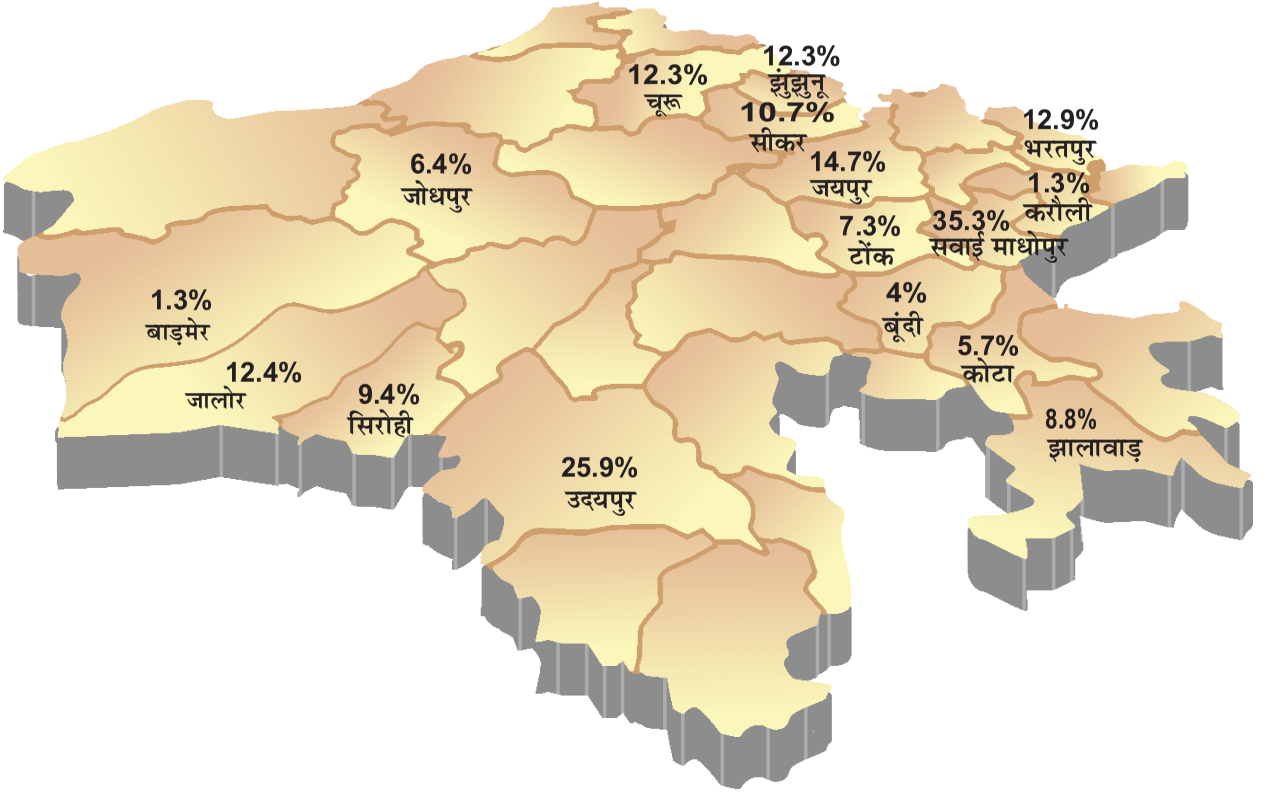

जिले अनुसार महिलाओं की कुछ मांग।

''हमे निःशुल्क वाहन सुविधा चाहिए''

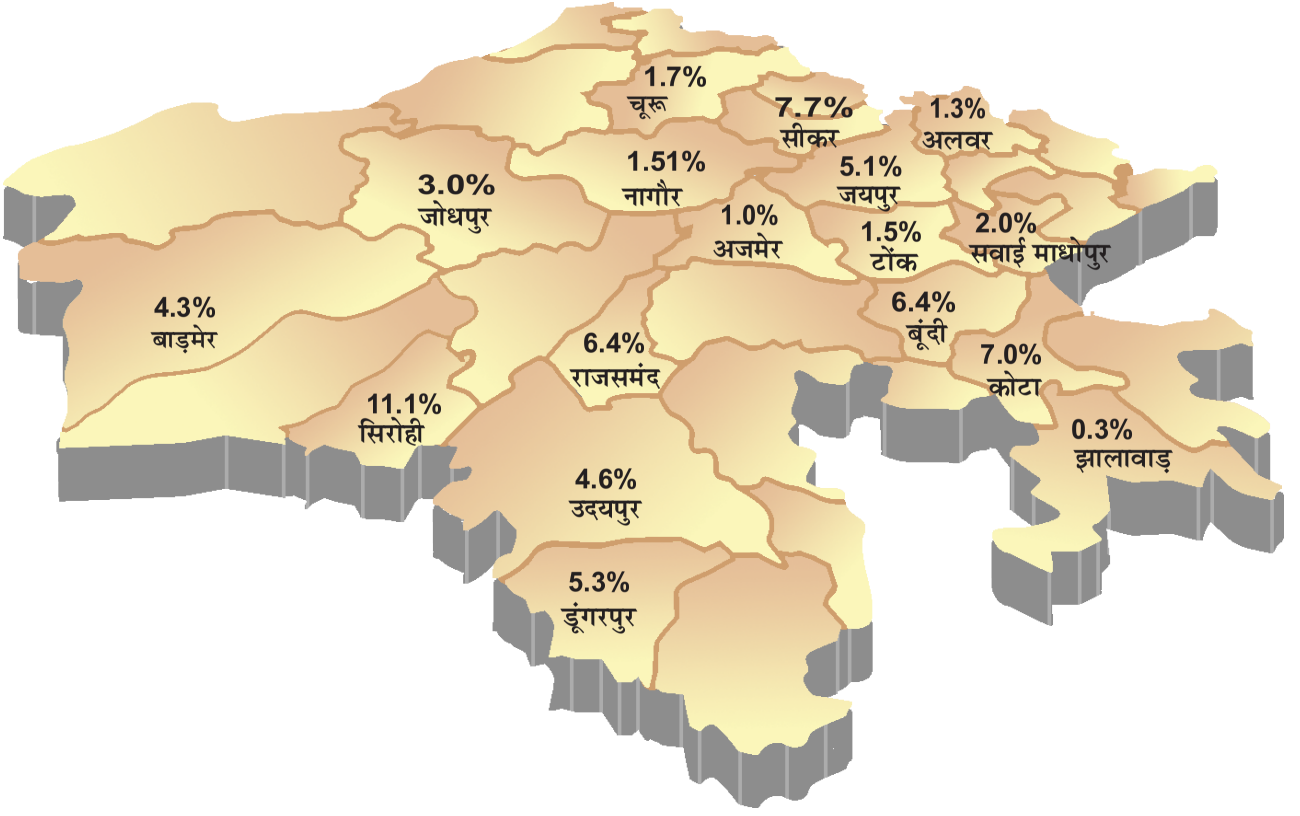

जिले अनुसार महिलाओं की कुछ मांग।

''हमे समय पर और सप्ताह के सातों दिन सेवाएँ चाहिएँ ।''

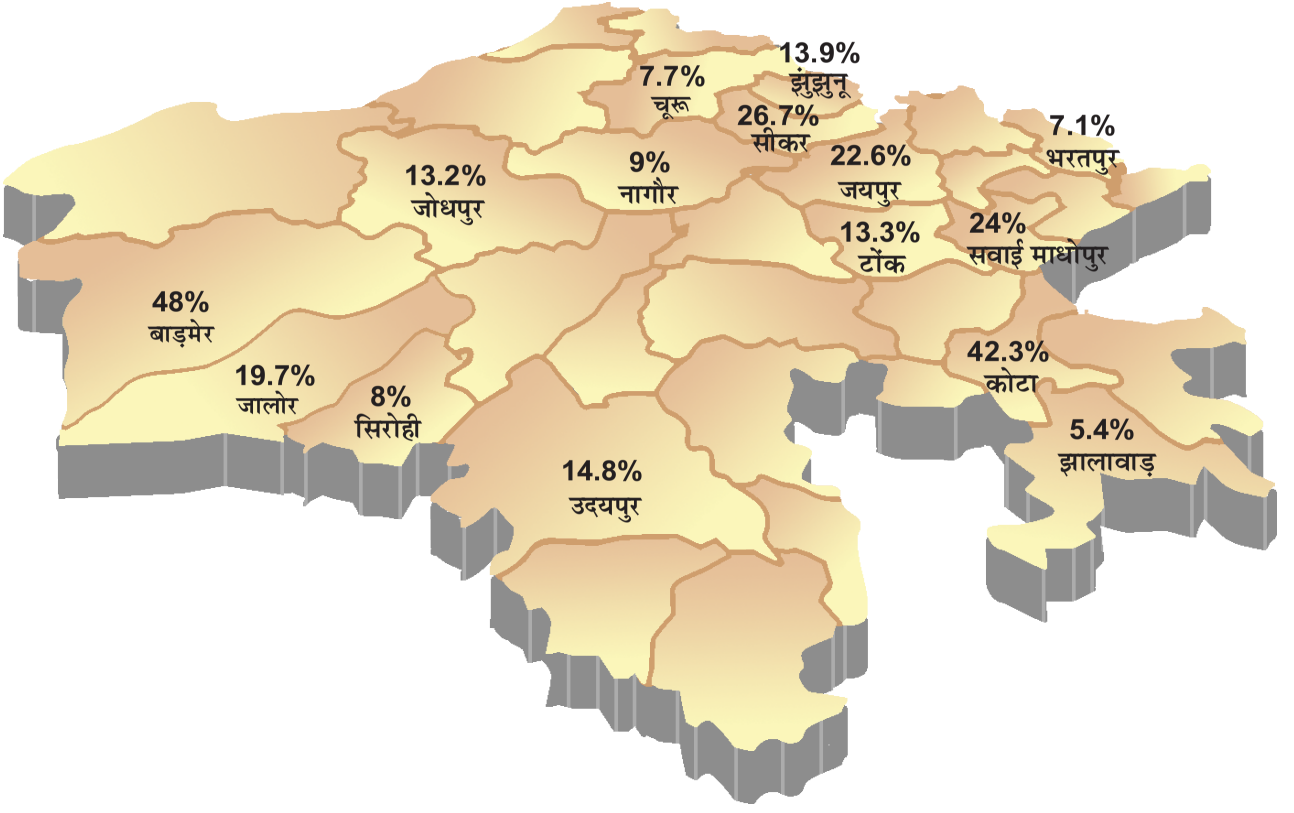

जिले अनुसार महिलाओं की कुछ मांग।

''हम भेदभाव विहीन, समानता युक्त सेवाएँ चाहतीं है ।''

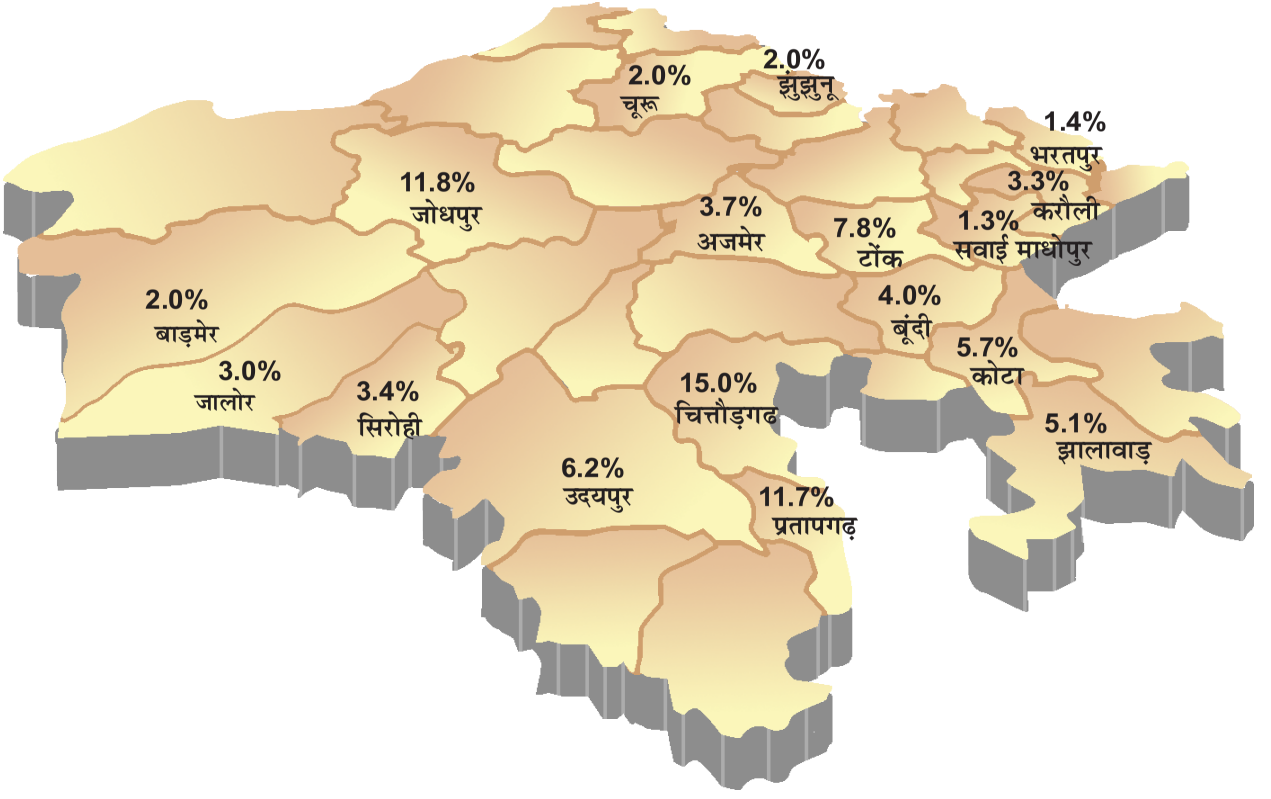

जिले अनुसार महिलाओं की कुछ मांग।

''हमे स्वास्थ्य सुविधाओं पर पर्याप्त साधन सामग्री चाहिए ।''

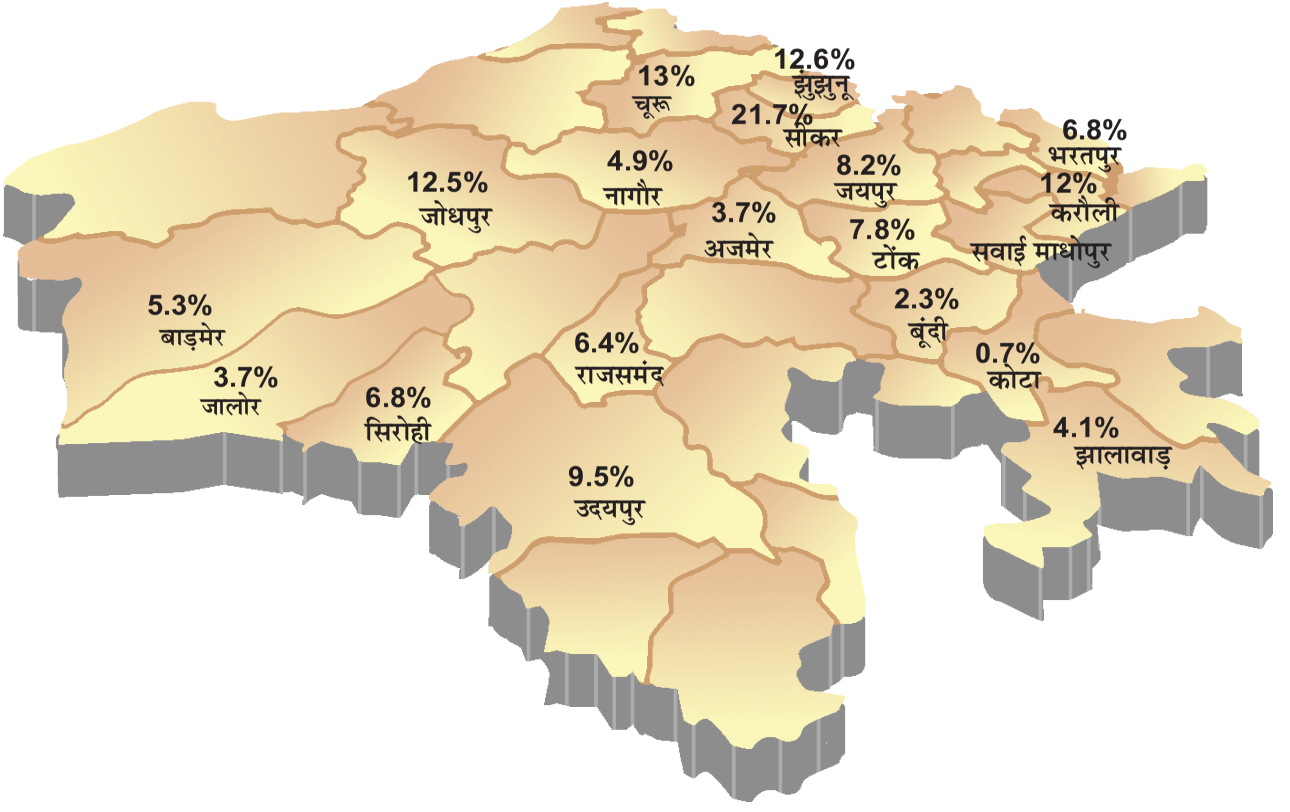

हमारी अनुशंसाएँ

महिलाओं के सुझावों के आधार पर निम्न कदम उठाए जा सकते हैं

1. जब स्वास्थ्य सेवाएँ महिलाओं की जरूरतों के अनुसार होती हैं तो वह बेहतर होती हैं। स्वास्थ्य सेवाओं के नियोजन में महिलाओं की मांग और आवाज़ को शामिल करना चाहिए। ग्राम सभा, जिसे संवैधानिक मान्यता प्राप्त है,एक ऐसा मंच है जहाँ समुदाय अपनी आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। महिला ग्राम सभा आयोजित करके स्वास्थ्य सेवा नियोजन और प्रदायगी में महिलाओं की भागीदारी और आवाज़ शामिल करनी चाहिए।

2. मानव संसाधन, स्वास्थ्य सेवा प्रदायगी का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। पर्याप्त और कुशल मानव संसाधन उपलब्ध करवाने के साथ साथ उनकी उचित नियुक्ति और तकनीकी और प्रबंधन कुशलता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों में संवेदनशीलता के पहलू जोड़े जा सकते हैं।

3. स्वास्थ्य सेवाओं का नियोजन इस प्रकार होना चाहिए ताकि सेवा प्रदाता चौबीसों घंटे उपलब्ध हो सकें; विशेष रूप से महिला सेवा प्रदाता उपलब्ध होना चाहिए। क्षेत्र में आशा और एएनएम नियमित रूप से उपलब्ध होनी चाहिए।

4. स्वास्थ्य केंद्र साफ होने चाहिए, अपेक्षित मातृत्व सुविधा अच्छी तरह से प्रदान करने के लिए आवश्यक आपूर्ति और उपकरणों से सुसज्जित होना चाहिए। इंतजार कर रहे मरीजों के बैठने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

5. स्वास्थ्य केन्द्रों को सुद्रढ और उन्हें अपग्रेड करने की आवश्यकता है। प्रथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सीएचसी और जिला अस्पताल में सोनोग्राफी, एक्स रे मशीन और ब्लड बैंक/स्टोरेज सेंटर होना चाहिए।

6. सभी सेवाएं और आपूर्ति मुफ्त होनी चाहिए। कोई दवा बाहर से निर्धारित नहीं की जानी चाहिए और सेवा प्रदाताओं द्वारा अनौपचारिक भुगतान की मांग को रोका जाना चाहिए।

7. महिलाओं को उनके सभी अधिकारों के बारे में बताया जाना चाहिए और उन्हें सेवाओं से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें स्वास्थ्य संबंधी निर्णय लेने के लिए आवश्यक सभी जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

8. जाति और आर्थिक स्थिति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। सम्मानजनक, भेदभावपूर्ण व्यवहार के लिए सेवा प्रदाता को संवेदनशील बनाना चाहिए।

9. समय पर और तर्कसंगत रेफरल और संकट के दौरान महिलाओं के लिए मुफ्त परिवहन की उपलब्धता और जिला अस्पताल और सिविल अस्पताल जैसी उच्च सुविधा के लिए रेफरल की व्यवस्था की जानी चाहिए।

10. किशोर लड़कियों के लिए मुफ्त सैनिटरी नैपकिन को उनके हकदार के रूप में सुनिश्चित किया जाना चाहिए। माध्यमिक विद्यालयों में लड़कियों के लिए स्वच्छ शौचालय बनाना और प्रत्येक घरेलू स्तर पर सुरक्षित होना चाहिए।

11. महिलाओं के लिए सुरक्षित पेयजल और अलग स्वच्छ शौचालय उपलब्ध होना चाहिए।

लेखन: वैद्य स्मिता बाजपाई, परियोजना निदेशक, चेतना; डॉ. अलका बरुआ, वरिष्ट रीसर्च तथा बाल रोग विशेषज्ञ

WHAT WOMEN WANT!

हमारा स्वास्थ्य, हमारी आवाज

गुणवत्ता पूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए महिलाओं की मांग

हमारी आवाज़ सुनो

SuMa-Rajasthan White Ribbon Alliance for Safe Motherhood

THE WHITE RIBBON ALLIANCE India

HEALTHY MOTHERS HEALTHY WORLD

सुमा सचिवालय

चेतना

महिलाओं युवाओं और बच्चों के लिए समर्पित

सेन्टर फॉर हेल्थ, एज्युकेशन, ट्रेनींग एन्ड न्युट्रीशन अवेरनेस

बी ब्लॉक, तीसरी मंजिल, सुपथ-२, वाडज बस टर्मिनस के सामने, आश्रम रोड,

वाडज, अहमदाबाद-380 013, गुजरात दूरभाष: 079-27559976/77,

फेक्स: 079-27559978 ईमेल: suma@chetnaindia.org and chetna@chetnaindia.org

वेबसाईट: www.chetnaindia.org फेसबुक: Chetna Nfd

Illustration by Nagji Prajapati 232-42019